मिथिलेश्वर के उपन्यास में नारी संघर्ष

शोध निर्देशक

डॉ. मनीषा शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, इंदिरा गांधी नेशनल ट्राईबल विश्वविद्यालय
अमरकंटक (म.प्र.)

शोधार्थी

अदेसिंह भयड़िया

पी–एच.डी. (हिन्दी साहित्य)
शोध केन्द्र – भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

शोध सार

मिथिलेश्वर उन उपन्यासकारों और कहानीकारों में से है जिनका रचनाकर्म अपनी मिट्टी से उपजे मानवीय यथार्थ से सुदृढ़ हुआ है। मिथिलेश्वर ने छः उपन्यास लिखे झुनिया, प्रेम बाड़ी न उपजै, माटी कहे कुम्हार से, यह अंत नहीं, सुरंग में सुबह और युद्धस्थल।

हिन्दी साहित्य में सूर्यबाला, प्रभा खेतान, तस्लीमा नसरीन, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा जैसी लब्ध प्रतिष्ठित लेखिकाओं ने नारी की उपेक्षा, शोषण, नारी के प्रति हिंसात्मक व्यवहार आदि पर नारी मुक्ति के लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से संघर्ष किया है। नारी की अस्मिता को पुरुष ने सदा पद दलित किया है।

डॉ. आशारानी व्होरा के शब्दों में ''भारत की औसत नारी आज भी सामाजिक दृष्टि से उतनी ही पिछड़ी है। इसलिए या तो वह अपने हितों और हकों से अनभिज्ञ हैं या हित स्वार्थ में नए प्राप्त हकों का दुरुपयोग करने लगी है।''[1]

साहित्य में सदियों से सतायी जा रही स्त्री की विभिन्न समस्याओं को प्रकट किया है। मिथिलेश्वर ने ग्रामीण नारी की विभिन्न दशाओं को बहुत करीब से देखा है। जन्म से ही कष्टमय जीवन व्यतीत करने वाली नारी ससुराल में दासी की तरह ताजिंदगी खटती रही है। अपनी सभी इच्छाओं को दबाकर वह अपनी संतान के लिए त्याग करती है। पल–पल उसके लिए और मनोवांछित सुख के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहती है।

इन उपन्यासों के महिला चरित्रों के माध्यम से उन्होंने समाज में नारी संघर्ष के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है। उन्होंने ग्रामीण नारी को बहुत करीब से देखा। ग्रामीण नारी शिक्षा से वंचित, जीवन भर अज्ञानता के कारण अनेक समस्याओं का सामना करती रहती है। उन्होंने नारी के पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक और दाम्पत्य जीवन के संघर्षों को प्रभावात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। इसी के साथ लिंग भेद, दहेज, रूढ़ि व अंधविश्वास, शिक्षा की कमी, शारीरिक शोषण की समस्या को प्रमुखता के साथ उठाया है।

परम्परा से ही नारी के प्रति समाज का व्यवहार अत्यंत संकुचित रहा है। इसके मूल में पुरुष वर्चस्ववादिता प्रमुख रूप से प्रतीत होती है। सदा से नारी को स्वतंत्रता नहीं है। उसे पर्दे में रहना पड़ता है। निरन्तर संघर्ष ही नारी की नियति बन चुकी है।

ग्रामीण नारी शिक्षा से वंचित है। जीवन भर अज्ञानता के कारण दुख को झेलती रहती है। सदा दुख ही उसकी अनिवार्यता है। ग्रामीण स्त्री अंधविश्वासों में जकड़ी हुई है। आज भी पुरुष की दृष्टि में नारी के प्रति परम्परागत आचरण विद्यमान है।

'प्रेम न बाड़ी ऊपजै' उपन्यास में मध्यमवर्गीय सुशिक्षित मोना (शकुन्तला श्रीवास्तव) की प्रेम कथा है। नायक पूर्व नियोजित षड़यंत्र के तहत न तो नायिका को धोखे से फँसाता है, न चालाकी से भागता है और न ही जानबूझकर उसे बर्बाद करता है।

शिक्षित मध्यमवर्गीय स्त्री शकुन्तला श्रीवास्तव (उर्फ मोना लिसा) का प्रेम उच्चवर्गीय परिवार रूपेश से हो जाता है। मोना और रूपेश दोनों एक दिन पलायन करते हैं और जगह–जगह भटकते हैं। सफर–दर–सफर प्रेम के मिथक को खंडित होने लगता है।

अन्त में लिसा के लिए एक पत्र छोड़कर उसे निपट अकेली छोड़ भाग जाता है। कठोर यथार्थ की दलदली जमीन.....प्रेम की भयानक विडंबनाएँ उसे अन्ततः निराल हो जाती है।

अपनी संवेदनापूर्ण कथा को डायरी के माध्यम से वह अपनी व्यथा व्यक्त करती है, जिनमें उसने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के प्रेम के मादक प्रसंग चित्रित किये है।

'यह अंत नहीं' उपन्यास में चुनिया और जोखन अति पिछड़ी जाति के कहार थे। खेती करना उनका पुश्तैनी काम था। आजीविका की तलाश में आरा के एक सेठ के यहाँ कारिन्दे के रूप में काम कर रहे थे। चुनिया और जोखन को भी जातिगत विद्वेष में फँसना पड़ा। सम्पन्न परिवार के श्रवण कुमार के बेटे के साथ चुनिया से बलात्कार करने का प्रसंग आता है। लेकिन वह चण्डी रूप में प्रतिकार करती है और उसके प्रयास को असफल कर देती है। फिर कुछ गुण्डे उसका बलात्कार करने की कोशिश करते है। फिर दुर्दान्त डकैत छेदी लुहार उसका अपहरण करता है।

अन्त में चुनिया और जोखन का प्रेम व्यक्त होता है।

डाकू के अपहरण से मुक्त होने के बाद चुनिया जोखन का प्रेम और भी अधिक बढ़ गया।

मिथिलेश्वर का 'यह अंत नहीं' उपन्यास नारी विमर्श की अनोखी पहल है। नायिका चुनिया के आत्मबल, साहसिकता, हिम्मत, जीवटपन का लेखन ने चित्रण किया है।

''उसका व्यक्तित्व लोमहर्षक ही नहीं अपितु उसमें अपराजेय जीवन शक्ति मौजूद है। उपन्यासकार ने चुनिया के चरित्र को महाकाव्यात्मक गरिमा दी है या कहें कि वह नारी चेतना में पौरुष का अन्वेषण करता है। चुनिया ग्राम जीवन की एक ऐसी जुझारू नारी है जो संघर्ष का व्यष्टि दायरा लाँघकर समष्टि तक पहुँचती है।''[2]

वह पति जोखू का अपहरण होने पर थक–हारकर बैठती नहीं बल्कि उसे खोजने निकल पड़ती है बिना किसी की परवाह किए। उसका साहस देखकर मुखिया घमाडी राय कहता है – ''ई तो शेरनी है, शेरनी, असली छत्रानी।''[3]

इस उपन्यास के विषय में राकेशकुमार का मत समीचीन है – ''यह अंत नहीं की प्रमुख चरित्र है अनपढ़ चुनिया जो पुरुष वर्चस्व के मिथक को उसके समस्त पौरुष और प्रज्ञा को ध्वस्त कर देती है।''[4]

यह एकनिष्ठ प्रेम का सादृश्य विधान है। प्रेम और सतीत्व दो नहीं, वरन् एक ही चीज होते है।

'झुनिया' उपन्यास में गाँव के रहने वाली निम्न जाति कहार की लड़की 'झुनिया' जवान हुई। देह के आकर्षण से प्रेरित हर एक की निगाह 'झुनिया' की ओर आकृष्ट होती है।

झुनिया अपने पिता की मजबूरी को जानती है इसलिए वह अधिक प्रतिकार नहीं करती। इस कारण वह किसी के हवाले तन समर्पित कर देती है। झुनिया एक मजदूर बाला है। झोपड़ेनुमा उसके घर में न किवाड़ है न ताला। इसलिए गाँव का हरनाम उसके घर आता है और नशा उतार कर चुपचाप चला जाता है।

उसके गाँव का मजदूर सोमारू झुनिया को चाहता है और झुनिया भी उससे प्रेम करती है।

झुनिया और हरिहर आये दिन सामन्ती संस्कृति के शोषणकर्ता बने हुए है। झुनिया देह के प्रति से पतित होकर भी वह सोमारू के साथ उसे जूठन के रूप में इस्तेमाल नहीं करती।

'युद्धस्थल' उपन्यास में रामशरण बहू के पति की मृत्यु हो गई थी। वह गरीब विधवा प्रताड़ित, विसंगति से भरी और निःसन्तान स्त्री को कदम–कदम पर 'डायन' कह कर अभिशापग्रस्त हो गई। गाँव वाले ने उसे 'डायन' घोषित कर उसको अत्यंत लांछित जीवन जीने के लिए बाध्य हो गई।

दिन–प्रतिदिन रामशरण बहू की डायन होने की खबर गाँव अफवाहों की आंटी बनकर फैलती चली गई। कहीं भी गाँव में कोई घटना हुई कि इसके लिए रामशरण बहू को ही लपेटा जाता है।

प्रमोद सिंह की गाय मरी, दूधनाथ चौधरी का बेटा पीलिया से मर गया, इस प्रकार की हर घटना के लिए रामशरण बहू को ही डायन मानकर इसके लिए उसे ही जिम्मेदार माना जाता है।

'माटी कहे कुम्हार से' नायिका प्रधान उपन्यास है। इसमें मिथिलेश्वर ने भारतीय समाज की उन सभी समस्याओं को उठाया है जिससे एक नारी का सामना रोज होता है। उपन्यास की रेखांकित समस्या नारी संघर्ष व शोषण से रची गई है। नायिका मुनिला की कहानी समाज के प्रति नारी के विद्रोह की कहानी है। मुनिला के चरित्र को लेखक ने अत्यंत प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

ब्राह्मण परिवार की गूंगी लड़की कलावती शादी योग्य होने पर भी गूंगी होने से जाति वाले उसके साथ शादी नहीं करना चाहते। तब गूंगी कलावती ग्वाले विशुनदेव, जो घर के पास ही रहता है, रोज दूध देता है, उसके साथ देहिक सम्बन्ध हो जाते है। कलावती गर्भवती हो जाती है।

कलावती का परिवार इस अवैध सम्बन्ध को लेकर क्रोधित होकर विशुनदेव की हत्या करने की योजना बनाते है। विशुनदेव को इसकी भनक लग जाती है। इसलिए विशुनदेव कलावती को लेकर एक झोपड़पट्टी में आश्रय देकर रहने लगता है।

कलावती बच्ची को जन्म देती है। मुन्नी उसका नाम रखा जाता है। कलावती का परिवार कलावती और विशुनदेव को खत्म कर देते है। मुन्नी झोपड़पट्टी के लोगों में बड़ी होती है। और मुन्नीलाल से शादी होती है किन्तु मुन्नीलाल की हत्या हो जाती है।

कुछ समय पश्चात मुनिला और बूढ़े सुमेरसिंह का एक घटना के कारण मुनिला और सुमेरसिंह का देह सम्बन्ध बन जाता है। सुमेरसिंह उसके प्रेम प्रसंग में फँस जाते है। और दोनों पति–पत्नी के रूप में रहने लगते है। मुनिला गर्भवती होती है। एक दिन सुमेरसिंह ह्रदयघात से मर जाते है।

मुनिला किसी कमजोर बच्चे को जन्म नहीं देना चाहती और अपने पेट (कोख) पर प्रहार करती है और डॉक्टर की सहायता से गर्भपात करवाती है। बाद में मुनिला दूसरों के घर पर काम करके जीवन गुजारा करती है।

'सुरंग में सुबह' इस उपन्यास में राजनीति का भरपूर प्रयोग किया गया है। इसमें ठीक–ठीक किसी के पास में दाम्पत्य नहीं है। केवल अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए नायिका नायक के साथ देह सम्बन्ध स्थापित करती है।

राजनैतिक जीवन में संघर्ष का चित्रण मिलता है। शिवकुमार जी वर्तमान राजनीति के सन्दर्भ में कहते है कि – ''भयानक राजनीतिक वैश्वीकरण में साथ आई भौतिक सुखभोगवाद की अल्प संस्कृतिकरण वाले के युग में जबकि राजनीति के साथ जुड़े सारे विचार और आचारगत नैतिक मूल्य अप्रासंगिक ही हो उठ, धनबल और बाहुबल के अलावा अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए राजनेता औरत की देह से लेकर देश के राजनीतिक स्वत्त्व तक को दाँव पर लगाने में गुरेज नहीं करते है।''

वर्तमान राजनीति कितनी भ्रष्ट हो चुकी है कि बाहुबलियों, धन पतियों, स्वार्थी, धूर्त, पाखण्डी, नेताओं और उनके मुसाहिबों के हाथ का खिलौना बन गया है। सारे नैतिक मूल्यों को ताक में रखकर राजनीति कब से अपराधियों, मक्कारों और सत्तापरस्तों की रखैल बन गई है। हमने पूरे देश में इस हादसे को देखा है।

आज वह धनबल, बाहुबल, जाति, अधर्म, वंशवाद के आधार स्तंभों पर खड़ी एक छद्म भर है।

राजनीतिक आकण्ठ भ्रष्टाचारियों के हाथ के दल में फँसी हुई है। चारों ओर साम्प्रदायिक धर्मोन्माद का बोलबाला है। गलत मूल्यों को कदम–कदम पर क्षार–क्षार करके राजनेता, अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के लिए इस्तेमाल की जा रही औरत की देह भूमंडलीय करके साथ ाआने वाले अल्प संस्कृति का सैलाब और साधारण जनता के जीवन की बुनियादी जरुरतों कीमत पर समाज के छोटे से नव–नाय और दलित उत्पीड़न की रोमांचक मिसाल, जिन्दगी को एक बोझ की तरह ढोती देश की आधी से ज्यादा आबादी, यही तो वह भारत है, जो बीसवीं सदी से लेकर नयी सदी की दहलीज तक आया है।

मिथिलेश्वर ने इस उपन्यास की रचना राजनीतिक मकसद से रचा है। वस्तुतः लोकतंत्र के संकट को जूझते जनार्दन और उसके सहयोगियों के कर्मठ प्रयासों पर एक संवेदनात्मक पोल खोल देने वाला उपन्यास है।

मिथिलेश्वर ने इस उपन्यास के माध्यम से सिद्धान्तविहीन राजनीति के दुष्परिणामों को उजागर किया है। जनार्दन और उसके संघर्षशील साथियों को यह समझने आया कि कोई पार्टी गंभीरता से जन आन्दोलन का गठन नहीं कर पा रही है। इसलिए ऐसे संगठन अंत में बुरी तरह से असफल हो जाते है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मिथिलेश्वर ने ग्रामीण नारी की विभिन्न दशाओं और समस्याओं को करीब से देखा है। उन्होंने अपने विभिन्न उपन्यासों में विभिन्न नारी पात्रों के द्वारा नारी संघर्ष के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यासों के नारी पात्र मुनिला, झुनिया, चुनिया उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जो नारी संघर्ष के विरुद्ध अपनी आवाज पुरजोर तरीके से उठाती है और अन्याय का विरोध करती है।

संदर्भ :

1. व्होरा आशारानी, भारतीय नारी; दशा और दिशा, अपनी बात, पृ. 13।
2. काशिद गिरीश, अंतिम दशक के आंचलिक उपन्यासों में नारी विमर्श। वांड्मय हिन्दी पत्रिका। Vangmaypatrika blogspot.com। 18 मार्च 2008
3. मिथिलेश्वर, यह अंत नहीं, पृ. 274।
4. क्षोत्रिय प्रभाकर, वागर्थ, दिसंबर 2000, पृ. 105 (नारी चेतना की महागाथा, राकेशकुमार)।